मिशन जंगल और गिनीपिग

–नमिता सिंह

'मिशन जंगल' में जब उसे शामिल किया गया तो वह रोमांचित था। वह एक वैज्ञानिक था। बायो टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ। वह डिफेंस प्रयोगशाला में काम करता था और इन दिनों वहां चल रहे कई प्रोजेक्ट्स में शामिल था। दो साल पहले उसे एक रिसर्च प्रोजेक्ट का इंचार्ज भी बना दिया गया और उन्हीं दिनों मिलिट्री सीक्रेट सर्विस में उसे शामिल किया गया। उसके कमांडर-इन-चीफ़ उसके काम से बहुत खुश थे।

उसे काम करने का नशा था। काम करने के अलावा उसके पास दुनिया में और कोई काम नहीं था। वो अपनी रिसर्च से अलग कुछ और सोचना भी नहीं चाहता था।

उसे नहीं मालूम ऐसा उसके साथ कब से हुआ। वह अपनी रिसर्च की डिग्री लेकर यूनीवर्सिटी से निकला। एक अच्छी-सी नौकरी करना और फिर घर परिवार बनाना चाहता था वह। उषा की मौजूदगी, हां, यही नाम था उसका, ताजा हवा का अहसास देती। डिफेंस लैब के एक रिसर्च प्रोजेक्ट में उसके साथ काम कर रही थी। वे लोग चूहों के स्नायु तंत्र और उनके हारमोनों में परिवर्तन करके कई तरह के प्रयोग कर रहे थे। चूहों के मस्तिष्क के किसी केन्द्र को अलग-अलग तरीकों से निष्क्रिय कर दिया जाता है और स्नायु केंद्रों को प्रभावित करके शरीर पर होने वाली प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता था। इसी के साथ शरीर में पाए जाने वाले हारमोनों की मात्राएँ घटाकर या बढ़ाकर उससे होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन भी उन शोध परियोजनाओं का हिस्सा था। मसलन, स्नायु तंत्र को प्रभावित करके चूहे के डरने की प्रवृत्ति नष्ट कर दी जाती। इसके बाद चूहा खुद बिल्ली के पिंजरे में प्रवेश करने लगता। इसी तरह हारमोनों में बदलाव लाकर चूहा किसी चूहिया को देखता तो डरकर भाग छूटने की

कोशिश करता। एक प्रयोग में तो ऐसा कुछ चूहे के शरीर में किया गया कि वह चुहिया को देखते ही भयंकर रूप से आक्रामक हो जाता और उसे जान से मार कर ही दम लेता।

उषा का रिसर्च में तनिक भी मन नहीं था। उसे अपने महत्वपूर्ण समझे जाने वाले प्रोजेक्ट में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। वह पिंजरों में बंद चूहों के पास फटकती भी नहीं थी। इधर-उधर घूमती। किताबें पढ़ती रहती। पुराने कागज-पत्तर टटोलती और जल्दी ही उकता जाती। वह उषा को बेचैनी से देखता। उसे समझाने की कोशिश करता और अंत में हाकरकर उसके हिस्से का भी काम कर देता। वह दिन-रात लगा रहता और दुगना काम करता। उसके डायरेक्टर प्रोजेक्ट पर चल रहे काम की प्रगति से बहुत खुश थे।

पूरे तीन महीने की गैर हाजिरी के बाद एक दिन उषा उससे मिलने आई। वह बहुत खुश हुआ। उसने सारे डॉक्यूमेंट्स, अब तक का पूरा काम और रिजल्ट्स उसके सामने रख दिए। कहा कि वह जल्दी-जल्दी पढ़ ले। समझ ले। जल्दी ही डायरेक्टर के साथ मीटिंग होने वाली है। उषा मुस्कुराती रही। फाइल के पन्ने उलटती रही और अचानक उन्हें उछाल दिया। वह परेशान हो उठा और दौड़-दौड़ कर कागज बटोरने लगा।

''क्या कर रही हो तुम! सारी मेहनत मिट्टी में मिला दोगी। जानती नहीं कि कितना जरूरी और महत्त्वपूर्ण काम है यह।''

''मुझे मालूम है, लेकिन मैं इससे भी ज्यादा जरूरी काम जानती हूँ। मैं तुम्हें लेने आई हूँ।''

''हमारे चूहों का क्या होगा! कितनी खास रिसर्च है यह। हमारे राष्ट्र को, जरूरत है इसकी। हमें दुनिया में अपना...।''

''नहीं, हमें नहीं चाहिए गिनीपिग। चूहों के अलावा और भी जरूरते हैं हमारी। मैं इस रिसर्च प्रोजेक्ट की हकीकत जानती हूँ।'' उषा ने उसकी बात काटते हुए कहा।

''क्या तुम्हें ये काम...देश के विकास में हमारा योगदान...अच्छा नहीं लगता! ये ही तो उन्नति के रास्ते हैं।''

''रास्ते और भी हैं! मुझे खुला आसमान भी अच्छा लगता है। सवेरे की खुशनुमा, मस्त हवा भी तो जीने के लिए जरूरी है। अच्छा बताओ, तुमने कभी किसी नदी की अठखेलियाँ देखी हैं। बारिश की बूँदों की ठंडक और धरती की सोंधी महक... बताओ

कैसी होती है! जीवन का कौन-सा रहस्य है उसमें...''

वह जाने कैसी-कैसी बातें कर रही थी। फिर नाराज हो गई और कहने लगी, ''अच्छा बाताओ, कब से अपनी लैब से बाहर नहीं निकले हो! सवेरे की भीगी ओस पर चलना कब से नहीं हुआ! चेहरा कैसा पीला पड़ रहा है तुम्हारा!''

''वो...वो... दरअसल पिछले महीनों में काम बहुत रहा। मैं यहीं लैब के बराबर वाले कमरे में सो जाता हूं। मेरे चूहे वहां रहते हैं न! उन्हें भी देखना पड़ता है! लेकिन तुम अपना काम तो समझ लो!''

और उसने मेज पर कागज फैला दिए। उनमें बनी ढेर सारी तालिकाओं को, प्रयोगों के परिणामों को समझाते-समझाते, वह अंकों के गणित में उलझता चला गया...। उषा कब उठकर चली गई, उसे पता ही नहीं चला।

उसकी शोध परियोजना की सफलता का ही नतीजा है कि उसे मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का सदस्य बना लिया गया! रिसर्च विंग के चीफ ने जो उसके कमांडर थे, उसे बताया-

''हमें तुम्हारे जैसे ही मेहनती और निष्ठावान वैज्ञानिक चाहिए। अब तो रोबोट के अलावा विश्वासपात्र और कर्मठ लोग मिलना मुश्किल है। हमें खुशी है कि तुम हमारे साथ काम कर रहे हो।''

कमांडर उसकी तारीफ करते हुए पीठ थपथपा रहा था और हँस रहा था। उषा ने भी एक दिन नाराज होकर उससे यही कहा था, ''मुझे शक होता है। तुम आदमी हो या रोबोट!''

''उषा, मैं तुम्हें नए प्रोजेक्ट के बारे में बता रहा हूँ। हम लोग ह्यूमन क्लोनिंग का इस्तेमाल फौज में करना चाहते हैं। अभी इन संभावनाओं पर एक मीटिंग हमने की है...''

''प्लीज, मुझे तुमसे कुछ नहीं जानना। मुझे अब तुमसे डर लगने लगा है। कहीं धोखे से तुम मेरे डी.एन.ए. का इस्तेमाल करके मेरा ही क्लोन न बना लो और फिर अपनी चूहों वाली टैक्नीक से एक जीता जागता गुलाम...जैसे तुम्हारे चूहे हैं। उषा-द-स्लेव-माई रिसर्च-माई क्लोन...!''

उसके जाने के बाद एक दिन अकेले में सोचता रहा वह। उषा का वह आइडिया बुरा नहीं था। ये औरतें-त्रिया चरित्र - इतने नखरे। दुनिया के आधे झगड़े औरतों की

वजह से होते हैं। बाहरी शकल सूरत से ही किसी की पहचान बनती है। एक खास शकल वाले इंसान को एक खास नाम दे देते हैं हम। मनुष्य की आत्मा-उसका सोच...सब बकवास। सबके वही हृदय, वहीं फेफड़े, एक सा ज़िगर, एक से गूर्दे। आदमी के दिमाग की चाबी पूरे तौर पर जल्दी ही हमारे हाथ में होगी। तब लैब में बनी उषा मेरी होगी। वह सिर्फ मेरी आज्ञा मानेगी। बारिश में नहाने की जुर्रत भी नहीं करेगी। अरे, इतना डरेगी वह खुली हवा में जाने से कि बस!... भविष्य की इस योजना के बारे में कल्पना करता हुआ वह खुश हो गया।

हाँ, तो उसका कमांडर, उसका चीफ, उसके काम की तारीफ कर रहा था। आदमी के दिमाग को, शरीर विज्ञान की क्रियाओं को कैसे-कैसे बदला जा सकता है..वह बायो इंजीनियंरिंग की अहम भूमिका के बारे में बात कर रहा था।

उसका कमांडर एक दिलचस्प आदमी था। वह अपने काम के प्रति जितना गंभीर था उतनी ही गंभीरता से वह शराब पीता और जम कर पीता था। पीते-पीते उसका चेहरा लाल हो जाता। उसके मोटे-मोटे गाल और फूल कर कुप्पा हो जाते। आँखें तैरने लगतीं। उसकी बातें... जैसे वह किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया हो। जीवन के नए रहस्यों को खोलता। नितांत अनुछई कंदराओं में विचरने लगता, गुफाओं के द्वार तलाशता। ऐसे वक्त वह चौकन्ना हो उठता। कमांडर न जाने किस रहस्य का सूत्र उसके हाथ में थमा दे। कौन-सा गूढ़ प्रश्न उसके सामने उछाल दे।

उस दिन बोलते-बोलते अचानक कमांडर ने उससे कहा कि वह बगल की कुर्सी पर आकर बैठे। वह सामने से उठकर पास आ गया। कमांडर ने फुसफुसा कर कहा कि अबकी नए सीक्रेट मिशन पर वह जाएगा कमांडर के साथ। उसे दिखाएगा सीक्रेट सर्विस की शानदार उपलब्धि। एक रिसर्च प्रोजेक्ट की शानदार सफलता।

रोमांचित हो उठा वह। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा महत्त्वपूर्ण अवसर मिलेगा उसे। कमांडर ने यह भी कहा कि इस मिशन में वह उसके साथ डिप्टी की हैसियत से रहेगा। वहां के अनुभवों के आधार पर उसे अपनी रिसर्च आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। डिफेंस के सारे रिसर्च प्रोजेक्ट राष्ट्र की सेवा में समर्पित हैं...कमांडर ने एक बार फिर उसे याद दिलाया।

वह बहुत खुश हुआ। उसे मालूम था कि यह सम्मान अपने काम की वजह से मिला है। बिना प्रश्नचिह्न लागए, निष्ठापूर्वक काम करने की वजह से मिला है। उसने आज तक यह नहीं पूछा कि फलाँ प्रोजेक्ट किस विभाग का है या फलाँ प्रोजेक्ट का

रिसर्च डाटा कहाँ गया। उसे तो बस एक ही बात मालूम कि अपने काम को करते रहना है। यह वैज्ञानिक शोध राष्ट्र विकास के लिए है। दुश्मनों को नेस्तनाबूद करने के लिए है। हाँ, ये सब कैसे होना है...या दुश्मन कौन हैं...कहाँ-कहाँ हैं...उसे कुछ नहीं मालूम। उसे ये मालूम करना भी नहीं। उसे सिर्फ अपने काम से मतलब था।

उषा के जाने के बाद तो सचमुच अपने शोध और चूहों के अलावा उसकी जिंदगी में कुछ और नहीं रह गया। उसे समझ ही नहीं आता कि वह क्या बात करे...क्या सोचे। उसके रहने, खाने-पीने की तथा सभी तरह की जरूरतें पूरी कर दी जातीं। सब उसका खयाल रखते। बाकी उसके चूहे...उसके प्रयोग...प्रयोगों की नतीजे...नतीजों पर विचार-विमर्श। सचमुच काम के अलावा उसे कुछ और कहने-सुनने की आदत नहीं रह गई थी।

कभी-कभी उषा का चेहरा उसके सामने घूम जाता। लंबा चेहरा, दूर न जाने कहाँ देखती बड़ी-बड़ी आँखें...कुछ बोलने की मुद्रा में सधे होंठ...वह सिर पटक देता। जब कभी उसका ध्यान आता, वह और ज्यादा काम में डूब जाता।

नियत दिन और समय पर वह कमांडर के साथ चल दिया। उनकी गाड़ी के आगे-पीछे दो और गाड़ियाँ चल रही थीं। कमांडर बहुत महत्त्वपूर्ण पद पर था।

कमांडर ने उससे कहा कि 'मिशन जंगल' के बारे में वह कुछ संकेत देना चाहता है, इसीलिए चलने से पहले दो घंटे उसने कमांडर के कक्ष में बिताए। वहां कई देशों के नक्शे लगे थे। कई क्षेत्रों के अलग-अलग नक्शे भी थे। कहीं-कहीं लाल-नीले निशान लगे थे। कुछ रास्ते चिन्हित थे।

वह इंतजार करता रहा निर्देशों का लेकिन कमांडर बैठा नाश्ता करता हरा, बतियाता रहा। अजीब आदमी है। कहता था मिशन जंगल पर बात करनी है और बैठा गप्प मार रहा है। कमांडर इत्मीनान से बैठा अंडे खा रहा था, जूस पी रहा था और धीमे-धीमे बोल रहा था।

वह देश की बात करने लगा। खतरे बाहर से थे और खतरे भीतर भी पैदा हो रहे थे। वह चिंतित लगता था। कहने लगा कि पिछले कई सालों से हमारी फौजें कश्मीर में तैनात हैं। पूर्व से लेकर पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक कई सीमा क्षेत्रों में लगी है। रेगिस्तान में फैली हैं, बर्फीले पहाड़ों में टंगी हैं या जंगलों में बिखरी पड़ी हैं। चाहे पुलिस का सिपाही हो या फौज का, अफसर हो या कमांडर, सभी दबाव में जी रहे हैं। इन दबावों का विस्फोट खतरनाक है।

''टेरिबल स्ट्रैस! हम सब तनाव में ही रहे हैं...'' कहते-कहते कमांडर खामोश हो गया। वह खाना खत्म कर चुका था। फिर वह हौले-हौले उँगलियों से मेज थपथपाने लगा माना किसी गाने की संगत कर रहा हो। फिर मुस्कुरा कर बोला, ''बड़ी कुत्ती चीज है फौज की यह नौकरी...'' कमांडर जब कभी हल्के मूड में होता तो अपनी भदेस बोली में उत्तर आता।

दरअसल कमांडर रोज हेडक्वार्टर पहुँच रही रिपोर्टों से परेशान था और उनके बारे में बताना चाहता था। अक्सर कहीं-न-कहीं फौजी आपस में भिड़ जाते। बेवजह गोलियाँ चलाने लगते। ड्यूटी के समय आत्महत्या कर लेते। पिछले महीने एक हादसा हुआ था। बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के सिपाही ने अपने बॉस को गोली से उड़ा दिया । वह पिछले कुछ दिनों से छुट्टी मांग रहा था और घर जाना चाहता था। फिर जब उसे अहसास हुआ कि वह क्या कर बैठा है तो अपनी ओटोमेटिक रायफल से चारों ओर गोलियाँ बरसाते हुए उसने चार और लोगों को घायल कर दिया जो उसे पकड़ना चाहते थे और अंत में खुद को गोली मार ली।

कमांडर इन घटनाओं से चिंतित लगता था। उसका कहना था कि फौज में जाओ तो दिल घर पर छोड़कर आओ। दिल और दिमाग एक साथ नहीं चल सकते। लड़ाइयाँ दिमाग से लड़ी जाती हैं। अपनी वर्दी से हर फौजी खुद को मोर्च पर समझे। वर्दी माने मोर्चा। मोर्चा माने दिमाग। दिमाग माने राष्ट्र.. और राष्ट्र माने मोर्चो...राष्ट्र माने युद्ध। युद्ध चाहे घर के भीतर हो या बाहर, सीमा पर।

''तुम्हारा दिल कहाँ है माय डियर! क्वीन ऑफ हार्ट्स! कहीं कोई हो तो छोड़ दो उसे। यहाँ सिर्फ हुक्म का बादशाह चलेगा। हुक्म का एक्का और बादशाह हा..हा..हा..हा..।'' कमरा उसके ठहाकों से गूँज उठा।

वह कसमसाकर रह गया। क्वीन ऑफ हार्ट्स...भीग रही होगी कहीं बारिश में।

हाँ तो उनकी गाड़ी के आगे-पीछे गाडियां और थीं। दोनों में एक-एक अफसर के साथ हथियारबन्द सैनिक। खासा लंबा रास्ता तय कर चुके थे वे लोग।

शाम ढलने को थी जब उनकी गाड़ी रुकी। उसने नीचे उतरकर चारों ओर नजर डाली। ऊपर देखा। आसमान में बादलों की सफेद गुच्छियाँ उतरती शाम के झुटपुटे में सुरमई रंग पहनकर सिंदूरी हो रही थीं। गुलाबी गालों वाले नटखट बच्चे बादलों के घेरे से जबरदस्ती झाँकने की कोशिश कर रहे थे। उसका दिल चाहा कि वह खड़ा रहे वहीं पर। ...यूं ही देखता रहे। ओहो, उसने कब से ऐसा आसमान नहीं देखा था। इतना रंग-

बिरंगा।

गाड़ियों से उतरकर दोनों आफिसर कमांडर को सेल्यूट कर रहे थे। उसकी तंद्रा टूटी। उसे तो कमांडर के साथ आगे जाना है। इस बीच एक और लंबी गाड़ी उन्हें लेने के लिए आ चुकी थी। उसका फौजी वर्दी में ड्राइवर और एक अन्य अफ़सर दरवाजा खोलकर खड़े थे, उनके लिए।

उसका कमांडर, इंचार्ज मिशन जंगल, धँस गया गाड़ी में। वह भी साथ बैठ गया था। गाड़ी अब जंगल के बीच से होकर गुजर रही थी। गाड़ी की तेज हैड लाइट्स सामने का रास्ता मानों साफ करती चल रही थी। इधर-उधर पड़ती रोशनी जंगल के घने में फँसकर खो जाती। खासा बड़ा और गहरा घना जंगल है... उसने महससू किया। धीरे-धीरे जंगल हल्का होता हुआ खत्म हो गया। रात पूरी तरह फैल चुकी थी। अब एक पतली साफ-सुथरी सड़क सामने थी।

जल्दी ही वे एक इमारत के सामने थे। दो फौजी स्वागत करने के लिए खड़े थे। लंबा पोर्टिको, फिर पाँच सीढ़ियाँ, उन पर हथियार बंद सैनिक सावधान की मुद्रा में। इमारत के बाहरी गेटी के सामने थोड़ी दूरी पर एक ऊंची निगरानी टावर अब साफ़ नजर आ रही थी। वहाँ खिड़कियों पर तैनात हथियार बंद सुरक्षा गार्डों की नजरें जरूर उन लोगों पर टिकी होंगी, उसने महसूस किया।

पाँच सीढ़ी ऊपर और फिर पाँच सीढ़ी नीचे। वे अब एक बड़े हॉल में थे। यह पाँच का क्या चक्कर है? कहीं कोई टोटका तो नहीं! अब तो पूरे मुल्क के सारे काम शुभ-अशुभ भविष्यवाणियों और टोने-टोटकों पर चल रहे हैं। क्या पता किसी ने यहां की शोध प्रयोगशालाओं के लिए पाँच की संख्या शुभ बता दी हो!

हॉल की खासी ऊंची छत और उसकी बनावट पुरानेपन का आभास दे रही थी लेकिन बाहर से उसकी रंगत और रखरखाव एकदम आधुनिक था। उसका कमांडर उन फौजियों से लगभग फुसफुसाकर बोल रहा था और वे भी उसी तरह जवाब दे रहे थे। शायद धीमे बोलना यहाँ के नियमों में हो, उसने सोचा। रात हो चली। लंबे सफर के बाद वह थकान महसूस करने लगा। खाने के मेज पर भी वही फौजी अफसर उनके साथ थे। सब लोग जमकर खा रहे थे और पी रहे थे।

कमांडर खाते ही अपने कमरे में चला गया। उसे मालूम था कि अभी थोड़ी देर वह और बैठेगा। दो-तीन पेग और चढ़ाएगा। ज्यादा पी लेने का उस पर कोई असर नहीं होता था सिवाय इसके कि उसकी मूँछे हिलने लगतीं।

उसे देर रात तक अपने कमरे में नींद नहीं आई। यह इमारत, यहाँ का पूरा माहौल रहस्यमय था। उसने बाहर झाँका। कमांडर के कमरे के बाहर एक हथियार बंद सिपाही मुस्तैदी से खड़ा था। वह फिर बिस्तर पर आकर पड़ गया।

किसी महत्त्वपूर्ण फौजी मिशन को, जो नितांत गोपनीय है, इतने करीब से देखना बहुत ही दुर्लभ होता है। इस सीक्रेट मिशन का वह एक हिस्सा है...यह सोचकर वह भीतर तक हिल गया। वह एक वैज्ञानिक है। उसने सिर्फ अपने शोधकार्य से मतलब रखा है। शोध का मतलब है नतीजा... रिजल्ट्स! लोग सिर्फ काम देखते हैं। किए गए काम से क्या लाभ हुआ...क्या आगे प्राप्त होगा...बस, यही महत्त्वपूर्ण है। क्या करो! कैसे करो! यह अपनी मर्जी पर है- इसे कोई नहीं पूछेगा। !''वी वॉण्ट रिजल्ट्स...ओनली रिजल्ट्स''... उसके प्रोजेक्ट के निदेशक ने कहा था एक बार।

वह भी लगातार इसी निष्ठा से काम करता रहा और उसे उत्साहवर्धक नतीजे मिलते रहे हैं। हर सौंपे गए काम को उसने पूरी ईमानदारी से किया है। वह काम क्यों किया जा रहा है। किस के लिए किया जा रहा है। उसने कभी कोई सवाल नहीं किया। काम करके प्रयोगों के आँकड़े निदेशक को थमाता रहा इसलिए आज इस ऊँचाई तक पहुँचा है। उसे बस इतना मालूम है कि वह अपना सारा काम राष्ट्रहित में कर रहा है। आज राष्ट्र को नए प्रकार के हथियार चाहिए, बम चाहिए, राकेट-मिसाइल चाहिए। नई वैज्ञानिक खोजों और टेक्नोलोजी से ही राष्ट्र उन्नति करेगा। बायो मेडिकल इंजीनियरिंग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। अब तो आदमी का दिल बदल दो, दिमाग बदल दो, जिगर-गुर्दा बदल दो। मेडिकल साइंस में सब कुछ संभव हो रहा है। रोबोट को आदमी जैसा बना दो और आदमी को हुक्म का गुलाम। उसे कमांडर की हँसी याद आई। सिर्फ हुक्म का इक्का और बादशाह ही नहीं, गुलाम भी.... वह मुस्कराने लगा और सोचते-सोचते न जाने कब सो गया।

दूसरे दिन वे समय से तैयार हो गए। दो नितांत नए फौजी अफसर उन्हें लेने आए थे। उनमें से एक बड़ी मूँछों वाला मस्त किस्म का लगता था, उसके कमांडर जैसा। उसने बहुत गर्मजोशी से हाथ मिलाया। दूसरा बेहद गोरा लाल चेहरे वाला था और एक अजब सख्त भाव फैला था उसके पूरे व्यक्तित्व और हाव भाव में! ऊहं! उसे क्या करना है? उसका काम अपने कमांडर के साथ रहना और मिशन जंगल की वैज्ञानिक उपब्धियों को देखना-परखना है।

दो गाड़ियों में बैठकर चल पड़े वे लोग। अबकी वह मूँछों वाला और उसका कमांडर एक गाड़ी में थे और उसके साथ वही लाल चेहरे वाला था। दो किलोमीटर के

सफर में वे दोनों ही चुप थे।

सँकरे, ऊँचे दरख्तों वाले रास्ते से गुजरते हुए अब एक चौरस मैदान नजर आने लगा। जब वे लोग उसे पार कर एक इमारत के सामने पहुंचे तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हूबहू पहली जैसी इमारत भी यह थी। फर्क सिर्फ यह था कि यह इमारत मैदान के सामने थे जब कि वह पहली वाली जंगल के छोर पर स्थित थी। वैसा ही गेट। उसी तरह की ऊंची टावर। वहीं पाँच सीढ़ियाँ ऊपर-फिर पाँच नीचे। सीढ़ियों पर खड़े हथियार बंद सुरक्षा गार्ड। इमारत की क्लोनिंग कर दी गई। क्या! वह हँसा! शायद दुश्मन को धोखा देने के लिए यह किया गया था।

बड़े हॉल से गुजरते हुए अब वे एक लंबा गलियारा पार कर रहे थे जो एक बहुत बड़े मैदान में खुल गया था। मैदान के दूसरी ओर लंबे बरामदे के साथ बैरकनुमा कमरे थे। जिधर से वे लोग आए थे, वहाँ इमारत दो मंजिला थी। ऊपरी मंजिल में प्रयोगशालाएँ थीं। मैदान के दूसरे छोर की इमारत भी दो मंजिला थी, जहां अत्याधुनिक हॉस्पीटल था। ऐसा ही उस लाल चेहरे वाले फौजी ने बताया था।

मैदान के अगले छोर से काफी दूर राडार सटेशन नजर आने लगा था। उसे लगा यहाँ एक अलग किस्म का साम्राज्य है। चुपचाप सा... रहस्य की पर्तों में घिरा। पूरा कार्यक्रम योजनाबद्ध रूप से तय था। मैदान में उपस्थित दो अन्य फौजियों ने उनकी अगवानी की। उसने अब गौर किया। अब वहाँ उन फौजियां के अलावा वे दो थे और वह मूंछों वाला था जो साथ आया था। लाल चेहरे वाला वहीं गलियारे से वापस चला गया था।

वे लोग मैदान में आगे बढ़ रहे थे और अब सब कुछ स्पष्ट था। मैदान के बीचोंबीच तीस नौजवान सैनिकों की एक टुकड़ी सावधान की मुद्रा में थी। उनके हथियार कंधे पर थे। ग्रुप कमांडेट सामने खड़ा था। सभी जवानों के चेहरे भावशून्य थे। आँखें जैसे पत्थर की दूर शून्य में गड़ी हुई।

मूँछों वाले ने उसके कमांडर से कुछ कहा। कमांडर ने सिर हिलाया और अपना चेहरा उसके निकट ले आया उसकी बात सुनने के लिए। उसने सोचा कि उसे भी यहां के बारे में जानना चाहिए। आखिर वह भी इस महत्त्वपूर्ण योजना के साथ जुड़ा है। इसीलिए तो वह यहां मौजूद है।

वह कमांडर और मूँछ वाले के ठीक पीछे सरक गया और अपने कान उनकी बातचीत के साथ लगा दिए। वह मूँछ वाला कह रहा था।

''यह मिशन जंगल का ही प्रोजेक्ट है। प्रोजेक्ट माउँटेन!''

''यह पहली टीम है?''

''जी हाँ।''

''और कितनी टीमें यहाँ हैं।''

''दो और हैं, लेकिन अभी तैयार नहीं हैं। दो साल और लगेंगे।''

''यह टीम कब से तैयार हो रही है।''

''पिछले पाँच साल से।''

''इनका ग्रुप कमांडेंट?''

''वह नार्मल था पहले। उसे प्रोजेक्ट में शामिल करना चाहते थे, लेकिन वह प्रॉब्लम करने लगा। इसीलिए सर्जरी करनी पड़ी थी उसकी भी।''

''इसे मालूम है?''

''नहीं!''

''अब?''

''अब सब ठीक है। सब एक जैसे हैं। आप जाँच कर सकते हैं।''

''वैरी गुड!''

कमांडर ने संतोष के साथ सिर हिलाया। मूँछों वाला अब पीछे आ गया। वह भी अपनी जगह पर खिसक लिया।

कमांडर धीरे-धीरे चलता हुआ टुकड़ी के पास पहुँचा। अब वह ग्रुप कमांडेंट की बगल में था। वह और मूँछोवाला भी उसके पीछे आ गया।

कमांडर की कड़कती आवाज सुनी उसने जो ग्रुप कमांडेट को संबोधित कर रहा था-

''मिस्टर कमांडेट, क्या यह आपका पूरा ग्रुप है।''

''यस सर!''

''ये सब क्या यहीं से रिक्रूट किए गए हैं?''

''नो सर, ये साउथ से आए हैं?''

''और यहाँ के लड़के?''

''वे साउथ भेज दिए गए सर!''

''इनका ट्रेनर कौन है?''

''मैं हूं सर!''

''क्या सबका मेडिकल ट्रीटमेंट ...मेडिकल चेकअप किया जा चुका है?''

''यस सर!''

कमांडर ने मूँछ वाले की ओर देखा। मूँछ वाले ने आँखों ही आँखों में कुछ कहते हुए आश्वस्त किया। कमांडर ने फिर पूछा–

''कितनी आज्ञाकारिता है?''

''सौ फीसदी सर!''

''कोई संशय! कोई समस्या!''

''नहीं सर?''

''क्या प्रदर्शन कर सकते हो? क्या सीमा है?''

मूँछों वाला सामने आया और उसने ग्रुप कमाडेंट से धीरे से कुछ कहा, जिस पर उसने सहमति जताई और फिर कमांडर से बोला–

''यस सर!''

उस नौजवान ग्रुप कमांडेट ने अपनी टुकड़ी को मैदान का एक चक्कर लगाते हुए मार्च कराया और फिर सबको सावधान की मुद्रा में खड़ा कर दिया। फिर अपनी टुकड़ी को कमांड करते हुए कहा–

''जवान नंबर एक! आप उस खंभे तक जाइए।''

सबसे आगे खड़ा, नीली आँखों वाला नौजवान लेफ्ट-राइट करता हुआ उस खंभे तक गया जो वहाँ से लगभग सौ मीटर की दूरी पर था। उसकी आवाज़ फिर गूँजी–

''नबंर एक! अब आपके ऊपर आक्रमण होना है।''

''यस सर।''

''कंपनी रेडी टू अटैक। टारगेट नंबर वन।''

बाकी सभी जवानों ने दौड़कर नंबर एक को आधा गोला बना कर घेर लिया। उसने अब ध्यान से देखा, ग्रुप कमांडेट को छोड़कर वे सभी किशोर वय की दहलीज

पार कर चुके नौजवान थे। उस खंभे से जहां वह नीली आँखों वाला नंबर एक जवान खड़ा था, घेरने वाले जवानों की बीच मुश्किल से बारह-पन्द्रह मीटर की दूरी थी।

ग्रुप कमांडेंट की आवाज फिर गूँजी–

''नबंर वन, यू आर गोइंग टू बी किल्ड। ये लोग तुम्हें मार डालेंगे। तुम समझ रहे हो?''

''यस सर!''

''अपना हथियार फेंक दो, नंबर एक! पुट डाउन योर वेपन! वन-टू...''

और नीली आँखों वाले उस नौजवानों ने चेहरे पर बिना कोई शिकन लाए अपना हथियार कंधे से हटा कर नीचे डाल दिया।

वह बेहद कौतूहल से सब देख रहा था, अब सिहर उठा। लाख यह नकली युद्ध हो लेकिन ऐसा नाटक झुरझुरी पैदा करने वाला था। तभी कमांडेट की आवाज फिर गूँजी,

''फायर!'' अटैक नंबर वन। किल हिम! आक्रमण! टारगेट नंबर एक।''

सभी जवानों ने एक पल को भी हिचके बिना अपने हथियारों से अपने ही साथी नंबर पर एक तड़ातड़ गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। गोलियों की आवाज से मैदान गूँज उठा।

वह साँस रोक कर देख रहा था। उसे मालूम था कि यह नाटक है और नकली गोलियाँ हैं जो सिर्फ आवाज करती हैं।

लेकिन उसके भय की सीमा न रही।

उसने देखा कि नंबर एक का शरीर छलनी होकर लहुलुहान पड़ा था। सभी जवान वापस अपनी पहली पोजीशन में लौट चुके थे। उसके कमांडर और मूँछों वाले के चेहरे खुशी से चमक रहे थे। यह उनकी योजना में नहीं था, लेकिन यह परीक्षण बेहद सफल था।

उसका शरीर काँपने लगा। तो यह नाटक नहीं था? यह उन जवानों के दिमाग का परीक्षण था जिनके ऑपरेशन हो चुके थे। जिनके दिमागों की इंजीनियरिंग की जा चुकी थी। वे शत-प्रतिशत सफल थे। आज्ञाकारिता सौ फीसदी पूरी थी। उसका सर चकराने लगा। ये जीते जागते इनसान थे या उसकी प्रयोगशाला के चूहे थे? वह भी तो अपने चूहों के साथ ऐसे ही परीक्षण करता रहा है। चूहों की संवेदना के स्नायु केन्द्रों को नष्ट करके और थोड़ी सी दिमागी कतर-ब्योंत करके वो भी तो चूहों से मनमाफिक काम

कराता रहा है। उसके प्रयोग भी तो सफल होते रहे हैं।

वही प्रयोग यहां इनसानों पर किए गए हैं। सौ फीसदी सफल! उसे अब समझ में आया उन प्रयोगों का सफल परीक्षण देखने और सफलता के स्तर को आँकने, जाँचने-परखने के लिए उसे यहाँ लाया गया है। उसे अपने आगे के काम को यहाँ तय करना होगा। इसी प्रोजेक्ट को विस्तार देना हेागा। उसकी प्रयोगशाला में चूहों के बदले क्या ये नौजवान लड़के होंगे? उसके चूहे क्या अब लड़कों में तब्दील किए जाएंगे...

उसके पैर डगमगाने लगे! उसकी नजर ग्रुप कमांडेट पर पड़ी। वह पहले जैसी मुद्रा में था। उसके जवान भी उसी तरह खड़े थे...निर्विकार...अगले आदेश की प्रतीक्षा में। पूरा माहौल एकदम शांत था, जैसे कुछ हुआ ही न हो। खून में लथपथ नंबर एक की नीली आँखें आसमान की ओर देख रही थीं। अचानक वह काँपने लगा। उसे बुखार चढ़ने लगा और बेतरह ठंड लगने लगी। उसने इधर-उधर देखा-कोई सहारा मिले। वह गिरने लगा था।

''क्या बात है? आर यू ऑल राइट...''

कमांडर की आवाज़ जैसे कोसों दूर से आ रही हो। उसका सर चक्कर खाने लगा। पूरे मैदान में न जाने किधर से आकर ढेरों चूहे धमाचौकड़ी मचाने लगे थे। सफेद चूहे... लाल गुलाबी आँखों वाले...गुलाबी थूथन लिए...इधर-उधर सूँघते...वे चूहे अब उसके ऊपर चढ़ने लगे थे।

वह धम से जमीन पर गिर पड़ा। उसके बदन में सचमुच चीटिंया सी रेंग रही थीं। अचानक उसे महसूस हुआ कि वह खुद एक चूहे में तब्दील हो गया और कमांडर उसको गर्दन से पकड़ कर उसके माथे पर निशान लगा रहा है ''इसकी भी सर्जरी होगी...दिमाग ठीक करो इसका..''

उसका दम घुटने लगा। छाती पर बेतरह बोझ था। ''दिल-बिल क्या होता है माई डियर! ब्लॉक करो इसे...'' कमांडर का अट्टहास उसके कानों में गूँजने लगा। वह आँख खोलना चाहता था, लेकिन चारों ओर अँधेरा था। हाथ-पैर हिलाना चाहता था लेकिन बदन सुन्न था।

''एक्सीलेंट आफिसर! एक्सीलेंट, आपका प्रोजेक्ट परफेक्ट है। मैं रिपोर्ट भेजूँगा हैडक्वार्टर!''

कमांडर जरूर मूँछ वाले की पीठ थपथपा रहा होगा। वह उठना चाहता था। कमांडर के साथ वापस जाना चाहता था। वह गिनीपिग नहीं है। वह तो फँस गया है

इस जंगल में। नहीं, वह नहीं जाएगा खँभे के पास... ''यू आर गोइंग टू बी किल्ड...तुम डरपोक आदमी...!''

अचानक जैसे बादल गड़गड़ाने लगे। उसकी चेतना डूबने लगी। उसे लगा कि बारिश हो रही है। तभी न जाने कहाँ से उषा वहाँ आ गई। वह उसका हाथ पकड़कर खींच रही थी-छोड़ो यह सब। जाने दो चूहों को। कितना सुहाना मौसम है। जंगल में बारिश बहुत अच्छी लगती है। आओ, दौड़ लगाएँ...।

नमिता सिंह

जन्म : 4 अक्तूबर, 1944

प्रमुख कृतियाँ : खुले आकाश के नीचे, राजा का चौक, नीलगाय की आँखें, जंगल गाथा, निकम्मा लड़का (सभी कहानी संग्रह) अपनी सलीबें (उपन्यास)

❑❑❑